Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE, 2019, VOL- 6/51

शारीरिक शिक्षा एवं क्रीडाः अवधारणात्मक स्पष्टीकरण

सुनील सिंह सेंगर, Ph. D.

एसोसिएट प्रोफेसर एंव विभागाध्यक्ष शारीरिक शिक्षा विभाग, के0 के0 पी0 जी0 कॉलेज, इटावा, उ0 प्र0

ई – मेल : sunilsengar05@gmail.com

Abstract

प्रत्येक समूह के लिये, परिवार से लेकर कार्य क्षेत्र तक, जिसमें कि कार्य क्षेत्र की क्रियाओं की असफलता तथा उनका प्रेम अलग–अलग प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक तत्परता पर आधारित होती है। प्रत्येक व्यक्ति को उन आवश्यकताओं से जो कि उनके बहुमुखी विकास की ओर उन्मुख होती है और जो उनके उच्च स्तरीय जैव क्रियाओं की साधन होती है; वहां पर शारीरिक संवर्धन की आवश्यकता प्राथमिक रूप से व्यक्ति की अपनी अवस्था से उत्पन्न होती है। किसी व्यक्ति के क्रीड़ा के तीन आधारभूत विशिष्टतायें हैं जिनमें भावनात्मक, वैयक्तिक और परिस्थितिजन्य अनुभव हैं। शारीरिक अनुभव के साथ–साथ क्रीड़ा भावनात्मक लगाव भी उत्पन्न करती है। सहभागियों और दर्शक के संदर्भ में उपयुक्त स्थितियां क्रीड़ा में लगाव उत्पन्न करती हैं। साथ ही साथ क्रीड़ा प्रतिस्पर्धा को भी जन्म देती है। खेल, अभिनय और खिलाड़ी तथा क्रीड़ा के अर्थ एवं अन्तर्सम्बन्ध क्रीड़ा में दार्शनिक अध्ययनों के केन्द्र बिन्दु हैं।

पारिभाषिक शब्दः *शारीरिक तत्परता,परिस्थिति जन्य,शारीरिक सम्बर्द्धन।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

विश्लेषण, विवेचना एवं निष्कर्षः

क्रीड़ा का अर्थ एवं आशय :

क्रीड़ा का अर्थ, समय की भांति स्व–प्रकट है, जब तक कि गम्भीरता के साथ इसे परिभाषित न किया जाये। बास्केटबाल, फुटबाल, हैण्डबाल, टेनिस और ट्रैक आदि क्रीड़ा को शारीरिक क्रियाओं के रूप में वर्गीकृत किये जाने पर बहुत कम असहमति है। शिकार, मछली मारना और कैम्पिग को भी क्रीड़ा के रूप में समझा जाता है, परन्तु क्या उनमें वहीं तत्व होते हैं जो कि फुटबाल और बास्केट बाल में होते हैं, क्या पहाड़ों पर चढ़ाई करना, ब्रिज और पोकर को क्रीड़ा के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है? एडवड1 (2003) ने अभिनय, आनन्द, प्रतिस्पर्धा, खेल और क्रीड़ा की अवधारणाओं को स्पष्ट करने हेतु एक प्रारूप प्रस्तुत किया है। अभिनय और क्रीड़ा को ध्रुवीय क्रियाओं के रूप में स्थापित करते हुए आपने उपर्युक्त क्रियाओं को

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

एक क्रम में श्रेणी प्रदान की है। यदि अभिनय से क्रीड़ा की ओर क्रमशः बढ़ा जाये तो निम्न स्थितियां स्पष्ट होती हैं–

- क्रियाकलाप, वैयक्तिक अधिकार से परे होता है और स्वच्छन्दता समाप्त हो जाती है।
- क्रियाकलाप के अन्तर्गत औपचारिक नियम और संरचनात्मक भूमिका और स्थान, सम्बन्ध और उत्तरदायित्व का महत्व बढ़ जाता है।
- दैनिक जीवन के दबाव और कड़वाहट से विलगता कम हो जाती है।
- क्रियाकलाप के समय; वैयक्तिक उत्तरदायित्व और अपने व्यवहार के गुण एवं चरित्र हेतु उत्तरदायित्व और अधिक बढ जाता है।
- समूह और सामूहिकता के क्षेत्र में वैयक्तिक भूमिका तथा क्रिया कलापों की प्राप्ति सन्निहित हो जाती है।
- लक्ष्य; क्रिया कलापों की परिधि में बाह्य मूल्यों से सम्बन्धित होते हैं और विविधतापूर्ण तथा जटिल होते हैं।
- क्रियाकलापों में वैयक्तिक समय का अधिकांश भाग खर्च होता है और तैयारी तथा गम्भीरता की स्थितियों में वृद्धि होती है।
- लगाव या आनन्द के परे शारीरिक और मानसिक क्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

क्रीड़ाविद् लॉय[2] (2008) ने क्रीड़ा की परिभाषा देते हुये कहा है कि क्रीड़ा वह खेल है जो संस्थात्मीकृत हो। क्रीड़ा एक सामाजिक संस्था होने के साथ–साथ सामाजिक स्थिति या सामाजिक व्यवस्था है। लस्चेन (1967:12, 1970:6, 1972:119) ने क्रीड़ा को संस्थात्मीकृत प्रतिस्पर्धा तथा अभिनय (प्ले) और कार्य के मध्य की जाने वाली शारीरिक क्रियाओं के रूप में परिभाषित किया है। क्रीड़ा (आन्तरिक) आवश्यक एवं (बाह्य) अनावश्यक पुरस्कारों से युक्त होती है, लेकिन अधिकांश पुरस्कार बाह्य होते हैं, तथा उनका मूल उद्देश्य उपयोगितावादी न होकर खिलाड़ी में यांत्रिक भावना का विकास करना होता है।

सहभागियों की प्रेरणा या क्रिया–कलापों की प्रवृत्ति के रूप में भी क्रीड़ा एक अभिनययुक्त क्रिया है, जबकि अन्य इसमें अपने कार्य या व्यवसाय के संदर्भ में भाग लेते हैं। वस्तुतः क्रीड़ा की सीमा एक क्रिया के रूप में आनन्द और अवकाश के सामान्य क्षेत्र में निहित है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

क्रीड़ा में शोध की एक परम्परा; क्रीड़ा और विस्तृत समाज के अर्न्तसम्बन्धों पर अपना ध्यान केन्द्रित करती है। विश्लेषण के अन्तर्गत निम्न आधारभूत प्रश्न सम्मिलित किये जाते हैं। सामाजिक संस्था के रूप में क्रीड़ा की प्रकृति क्या है और यह अन्य संस्थाओं से किस प्रकार सम्बन्धित है? क्रीड़ा की संस्था और कार्य क्या है और किन सामाजिक मूल्यों को वह ऊपर उठाती है? (लस्चेन[4] 2010:8) आदि कुछ विचारणीय प्रश्न हैं।

क्रीड़ा; समाज के लघु संसार के रूप में एक ऐसी वैयक्तिक प्रस्तुति है जो अधिकांश साहित्य में अर्न्तनिहित है। इसके अन्तर्गत सामाजिक मूल्यों, विश्वासों और विचार पद्धतियों पर अधिक बल दिया जाता है। जो क्रीड़ा के संस्थात्मक ढांचे के द्वारा व्यक्त और प्रवाहित की जाती है। बायल ने 'स्पोर्ट ऐज मिरर आफ अमेरिकन लाइफ (2003)[5] के अन्तर्गत इस विषय को विश्लेषित किया है। यह पुस्तक क्रीड़ा को समाज के दर्पण के रूप में प्रस्तुत करती है। जिसके अन्तर्गत सामाजिक जीवन के विभिन्न तत्व जैसे स्तरीकरण, प्रजाति सम्बन्ध, वाणिज्य, स्वचलित प्रारूप, कपड़े पहनने का ढंग, विधि की अवधारणा, भाषा और धार्मिक मूल्य आदि सम्मिलित हैं। इस संदर्भ में स्नाइडर (2002ए) ने हाईस्कूल प्रशिक्षकों के द्वारा ड्रेसिंग रूम में लगाये गये नारों को वर्गीकृत किया है, जिनके माध्यम से विश्वास, मूल्य और खिलाड़ियों आदि गुणों के विकास पर बल दिया जाता है। प्रोटेस्टेंट आचार–नीति के अपरोक्ष मूल्यों द्वारा उपर्युक्त में अधिकांश विशिष्टताओं का समर्थन किया जाता है। इस रूप में क्रीड़ा प्रभावात्मक सामाजिक मूल्यों के लिये 'मूल्य पात्र' है (एडवर्ड[6] 1973:35 5)। पुनश्च, क्रीड़ा और खेल में अन्तर सांस्कृतिक समंक एक समाज विशेष के मूल्यों और मानकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। राबर्ट एवं बेन[45] (1962), बाल[7] (1972)।

विशिष्ट क्रीड़ाओं का विश्लेषण करते हुए विभिन्न अध्ययनों के द्वारा क्रीड़ा और समाज के अर्न्तसम्बन्धों को लिपिबद्ध किया गया है। रीजमान और डेनी (1954) ने अमेरिकन आचार–संहिताओं को प्रस्तुत करने वाली क्रीड़ाओं का विवेचन किया है। इसी प्रकार प्रमुख बेसवाल लीग के सांस्कृतिक अमेरिकन समाज के मूल्यों, श्रम–विभाजन, वैयक्तिक सफलता और दलीय कार्य के महत्व को हार्ले (1973) ने स्पष्ट किया है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विलियम हारपर[8] (1974) ने क्रीड़ा के दार्शनिक अध्ययन किये जाने के तीन कारणों पर प्रकाश डाला है– प्रथम, यह कि क्या जानना है? इसकी खोज करना? हमारी संस्कृति में क्रीड़ा के प्रति विभिन्न विश्वास प्रचलित हैं। क्रीड़ा के दार्शनिक अध्ययन का दूसरा कारण प्रायोगिक या व्यावहारिक क्रियाओं को निर्देशित करना है और इसका तीसरा प्रमुख कारण क्रीड़ा में गहन समझ विकसित करता है।

विलियम हारपर का सुझाव है कि सन् 1963 से शारीरिक शिक्षा की विद्या की अभिरूचि दार्शनिक अध्ययनों में विकसित हुई। लक्ष्यबद्ध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रकाशित किये जाने वाले अनुसंधान कार्यों की महत्वपूर्ण पत्रिका (क्वेस्ट) का इसी वर्ष प्रारम्भ हुआ।

इलउड डेविस वह प्रथम शिक्षा शास्त्री था; जिसने शारीरिक शिक्षाओं के संदर्भ में दर्शन की उपयोगिता, उसकी विषयवस्तु और उसके विश्लेषणों तथा पद्धतियों को समझाया। फेकलीन हेनरी ने शारीरिक शिक्षा की विषयवस्तु के अन्तर्गत उसे एक विद्या के रूप में विकास के साथ–साथ इसके निश्चित उद्देश्यों के निर्धारण के लिए प्रयास प्रारम्भ किये गये, जिसका प्रतिफल 'क्रीड़ा' के रूप में प्राप्त हुआ। प्रारम्भिक दार्शनिक अध्ययन बहुत ही सामान्य कोटि के थे। जोहन ह्यूजिंगा, रोजन, केलायस आदि कुछ ऐसे दार्शनिक थे जिन्होंने शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में गहन अध्ययन किया था। खेल और अभिनय के संदर्भ में इन अध्ययनों की वैचारिक आवश्यकताओं की पूर्ति तो की; परन्तु अमेरिकन शिक्षा शास्त्री इन अध्ययनों की वैचारिकी का अनुसरण करने में पूर्णतः सफल नहीं हो पाये। क्रीड़ा की अवधारणा जब से शारीरिक शिक्षा से संयुक्त हुई; क्रीड़ा के अध्ययनों में भी विद्वतापूर्ण अनुसंधान किये जाने लगे। क्रीड़ा को परिमार्जित करने और विश्लेषित करने में सन् 1960 के दशक के अंतिम वर्षों और सन् 1970 के दशक के प्रारम्भिक वर्षों में विविध प्रयास किये गये। खेल, अभिनय, क्रीड़ा और खिलाड़ी आदि पदों के अर्थबोधों को परिभाषित करने और उनके महत्व को प्रतिस्थापित करने के सतत् प्रयास किये गये।

हेराल्ड वन्डरटेचाग और थामस सिंहान ने क्रीड़ा के दार्शनिक अध्ययन को समझने की प्रक्रिया के रूप में 'क्रीड़ा अनुभव' को विश्लेषित किया। उन्होंने किसी व्यक्ति के क्रीड़ा के तीन आधारभूत विशिष्टताओं का उल्लेख

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

किया है जिनमें भावनात्मक, वैयक्तिक और परिस्थितिजन्य अनुभव हैं। शारीरिक अनुभव के साथ–साथ क्रीड़ा भावनात्मक लगाव भी उत्पन्न करती है। सहभागियों और दर्शक के संदर्भ में उपयुक्त स्थितियां क्रीड़ा में लगाव उत्पन्न करती हैं। साथ ही साथ क्रीड़ा प्रतिस्पर्धा को भी जन्म देती है। खेल, अभिनय और खिलाड़ी तथा क्रीड़ा के अर्थ एवं अन्तर्सम्बन्ध क्रीड़ा में दार्शनिक अध्ययनों के केन्द्र बिन्दु हैं। दार्शनिकों की अपेक्षा समाजशास्त्री क्रीड़ा से सम्बन्धित पदों को परिभाषित करने में अधिक समय व्यतीत करते हैं। क्रीड़ा से सम्बन्धित प्रमुख पद (कथन) निम्नलिखित हैं[9]–

कथ्य–1	अनुपयोगितावादी उपयोगितावादी
कथ्य–2	प्रक्रिया उत्पाद, खेल कार्य
कथ्य–3	अवास्तविकता–वास्तविकता

शारीरिक सम्वर्द्धन एवं व्यक्तित्व :

सामाजिक आर्थिक परिवर्तन की गति के साथ शारीरिक संस्कृति और क्रीड़ा के क्षेत्र में भी विश्व स्तर पर क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय सीमाओं के अन्तर्गत संक्रमण हुआ है। जिसका बाह्य स्वरूप इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय संगठनों एवं संघों ने अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा संघों से अपने सम्बन्धों में वृद्धि की है। उत्पादन शक्तियों में हुये परिवर्तन और विकास की गति ने शारीरिक संस्कृति और क्रीड़ा के लिये नयी मानसिकता को जन्म दिया है। साथ ही साथ समाजीकरण की वर्तमान प्रक्रिया ने शारीरिक संस्कृति और क्रीड़ा के प्रति मानवीय दृष्टिकोण में परिवर्तन प्रतिस्थापित किया है। शारीरिक संस्कृति और क्रीड़ा के लिये नये उद्देश्य स्थापित किये गये और उत्पादन की दशाओं में हुये परिवर्तनों तथा अधिक अवकाश के समय ने, तथा संगठित क्रीड़ाओं व अनौपचारिक क्रियाओं में हुई सहभागिता की वृद्धि ने, क्रीड़ा के क्षेत्र और उसकी सम्पूर्ण व्यवस्था में विविध परिवर्तन किये हैं।

व्यक्तियों, समूहों और सामूहिकता के विकास के साथ–साथ विद्यालयों व व्यावसायिक संगठनों के सामाजिक सम्बन्धों की प्रक्रिया में हो रहे परिवर्तन का प्रभाव; अवकाश समय, क्रीड़ा तथा शारीरिक संस्कृति पर पड़ रहा है। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव व्यक्तित्व निर्माण के विभिन्न पक्षों पर पड़ता है। उच्च स्तर के खिलाड़ियों का प्रदर्शन न केवल उन्हें अथवा सम्बन्धित संगठन को प्रभावित करता है, वरन् उसका प्रभाव सम्पूर्ण समाज पर पड़ता

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है। वस्तुतः शारीरिक शिक्षा और क्रीड़ा के प्रति लोगों में बढ़ते हुये लगाव का प्रमुख कारण यह है कि यह लोगों के स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा उत्पन्न करता है। व्यवसाय तथा सामान्य जीवन में उच्च शारीरिक क्षमता प्राप्त करने, चारित्रिक विकास के विभिन्न गुणों को प्राप्त करने, अवकाश के क्षणों में भावनात्मक उपादेयता स्थापित करने और जीवन के प्रति हर्ष तथा उल्लास में वृद्धि करने हेतु शारीरिक शिक्षा और क्रीड़ा के प्रति लोगों की अभिरूचि एवं सहभागिता में वृद्धि हुई है।

शारीरिक संस्कृति और क्रीड़ा के विकास के आधारभूत प्रेरक मानवीय जीवन के उन पक्षों से उद्भूत होते हैं जहां वास्तविक क्रियायें और भावनायें प्रतिफलित होती हैं, जैसे– आर्थिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक और सांस्कृति क्षेत्र। इन क्रिया कोष्ठों का प्रभाव वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ता है। इस तथ्यपरक सम्बन्ध को मात्र द्वन्द्वात्मक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, जो शारीरिक संस्कृति व क्रीड़ा और उसके वैज्ञानिक अन्तर्सम्बन्धों के आधारभूत महत्व को स्पष्ट करता है। यह सामान्य प्रस्थापना है कि मनुष्य की निर्माणकारक और उत्पादक क्रियायें संस्कृति की पूर्वाभिव्यक्ति होती हैं। मार्क्सवादी दर्शन; संस्कृति को मानवीय जगत की बौद्धिक योग्यता और पदार्थ के प्रतिफल के रूप में देखता है।

संस्कृति; मनुष्य के शारीरिक और बौद्धिक पूर्णता की प्रक्रिया है। यह व्यक्ति की श्रेष्ठता शिक्षा, वैचारिकी, कलात्मकता और इन प्रक्रियाओं के प्रकटीकरण और व्यावहारिक जीवन में मानवीय क्रियाओं तथा प्रकृति एवं समाज के तथ्यपरक नियमों के मध्य स्थापित सहयोग के स्तर का समुच्चय है। इस भाव में संस्कृति जीवन के मानवीय पक्षों का प्रदर्शन व माप है, यह प्रकृति और समाज के ऊपर अधिशासन तथा सामाजिक सम्बन्धों का नियम व चेतनात्मक प्रारूप है।

सामाजिक प्रघटना और सामाजिक प्रक्रिया के रूप में (शारीरिक संस्कृति और क्रीड़ा) संस्कृति का केन्द्रीय भाग है। उससे शारीरिक पूर्णता का प्रकटीकरण और मनुष्य की शारीरिक शक्ति के विकास का पता चलता है जो कि जीवन के व्यावहारिक पक्ष में स्वस्थ संस्कृति और क्रीड़ात्मक क्रियाओं से संयुक्त जीवन में नेतृत्व की इच्छा से युक्त होता है। उपर्युक्त उद्देश्य के अभाव में मानवीय संस्कृति और शारीरिक संस्कृति की कल्पना नहीं की जा

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सकती। प्रकृति के उत्पाद और सामाजिक प्राणी के रूप में, मनुष्य सांस्कृतिक विकास का अन्तिम उत्पाद है और साथ ही साथ महत्वपूर्ण उत्पादक शक्ति भी है।

पूर्व तथा आधुनिक समय में भी मनुष्य के शारीरिक गुण भौतिक उत्पादन की आधारभूत दशायें रही है। भौतिक उत्पादन के क्षेत्र में शारीरिक और मानसिक अन्तःसम्बन्धों की प्रक्रिया में और बौद्धिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों के निर्माण प्रक्रिया में पूर्व की अपेक्षा आधुनिक समय के अन्तःसम्बन्धों में निरन्तर परिवर्तन हो रहे हैं। शारीरिक संस्कृति और उसके विशिष्ट स्वरूपों, क्रीड़ा, जिमनास्टिक, खेल, भ्रमण इत्यादि का मुख्य उद्देश्य शारीरिक कुशलता का प्रदर्शन करना होता है और विस्तृत अर्थो में, इनका उद्देश्य स्वास्थ्य को उत्तम बनाये रखना होता है।

सांस्कृतिक जीवन और उसके जटिल अन्तर्सम्बन्धों के अन्तर्गत शारीरिक संस्कृति, के प्रकार्य को समझने तथा विश्लेषित करने के लिये क्रीड़ा विज्ञान की आवश्यकता है। शारीरिक संस्कृति और क्रीड़ा एक सामाजिक प्रक्रिया है जो उद्देश्यबद्ध एवं व्यवस्थित रूप में शारीरिक गुणों और खिलाड़ियों की कुशलता को स्पष्ट करती है; साथ ही साथ यह समाज की प्रगतिशील संस्कृति के केन्द्रीय भाग को स्पष्ट करती है।

क्रीड़ा–विज्ञान विकास की प्रक्रिया में व्यक्ति की शारीरिक क्षमता को मनो–शारीरिक इकाई के रूप में निर्धारित करने वाले जैविकीय एवं सामाजिक नियमों का निरूपण करता है। यह इन प्रक्रियाओं के मूलभूत गुणों और कार्य–कारण सम्बन्धों को स्पष्ट करता है। यह व्यावहारिक जीवन में क्रीड़ा की उपयोगिता का परीक्षण तथा उन्हें अवधारणाओं, प्रभागों व सिद्धान्तों के रूप में प्रस्तुत करता है।

'शारीरिक प्रवींणता' सम्पूर्ण सामाजिक प्रयास की प्रक्रिया को प्रस्तुत करती है, जिनका उद्देश्य शारीरिक पूर्णता की प्राप्ति होता है। इस सन्दर्भ में 'शारीरिक प्रवींणता' का तात्पर्य जैविकीय, स्वास्थ्य तथा शारीरिक क्षमताओं के नियमों के सामाजिक विकास के अनुभवों की व्यवस्था से है। आधुनिक सामाजिक विकास की प्रक्रिया में क्रीड़ा सामाजिक संस्था के रूप में विकसित हो रही है। यह शिक्षा, कला, अर्थ, राजनीति, कानून, सम्प्रेषण और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश कर रही है। वस्तुतः क्रीड़ा प्रभावयुक्त

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सामाजिक शक्ति है जो विस्तृत क्षेत्र तक अपना प्रभावजनित (उत्पन्न) करने में सफल होती है।

मानव अस्तित्व तथा सामाजिक क्रियाकलापों में शारीरिक स्वास्थ्य एक आधारभूत आवश्यकता है। बालक से सामाजिक प्राणी (व्यक्ति) बनने की प्रक्रिया में मनुष्य जिन दशाओं से अर्न्तक्रिया करता है, वे दशायें सामाजिक परिवेश की इकाइयां हैं। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में व्यक्ति की जीवनशैली सुनिश्चित की जाती है। व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास के लिये प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सामाजिक संरचना द्वारा की जाती है। दूसरी ओर सामाजिक क्रिया के समायोजित अर्न्तसम्बन्धों के प्रतिमानित व्यवहार और वैयक्तिक आदर्श की विशिष्टतायें सामाजिक आवश्यकता से नये क्षेत्रों की खोज करती है। इस क्रिया परिधि में व्यक्ति की प्रस्थिति भी सुनिश्चित हो जाती है और उसके प्रतिफल में उसकी वैयक्तिक एवं सामाजिक भूमिका के क्षेत्र का भी निर्धारण हो जाता है। हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि स्थायी व संग्रहित आवश्यकताओं से परे व्यक्तिगत आवश्यकताएं गतिकीय होती हैं क्योंकि यह समाज से ज्यादा सामंजस्यपरक होती हैं। व्यक्तिगत और संग्रहित आवश्यकताओं को कुछ खास स्थितियों में संपाती नहीं होनी चाहिए।

शारीरिक संवर्धन बहुत सी क्रियाओं का निरूपण करता है। इसकी प्रमुख क्रिया यह है कि यह समाज की आवश्यकताओं को पूरा करता है जो कि उत्पादन में भाग लेने के लिये लोगों में शारीरिक प्रशिक्षण पहुंचाने का होता है। शारीरिक विकास (संवर्धन) से एक बहुमुखी, प्रसन्नचित्त और विकसित व्यक्तित्व की उत्पत्ति होती है। 'हरफन मौला' एवं 'सुसंगत' ये दो ऐसे मानक हैं जो पृथक होने योग्य नहीं हैं फिर भी ये अभिन्न नहीं हैः जबकि 'किसी भी व्यक्ति का बहुमुखी विकास' समर्थता तथा प्रतिभा के विकास को दर्शाता है, वहीं 'सुसंगत विकास' यह दर्शाता है कि किसी तरह किसी भी व्यक्ति की सामर्थ्य उनके अर्न्तसम्बन्ध में विकसित हो जाती है।[10]

शारीरिक व्यायाम; गतिकीय जनाधिक्य से सम्बन्धित खतरों को ही सिर्फ समाप्त करने में मदद नहीं करता, परन्तु वे तो आधुनिक उत्पादनों में सक्रिय व सार्थक मनोरंजन की अवस्थाओं का एक साधन है। इस मनोरंजन से लाभ यह है कि यह मांसल बाहुल्य को पुर्नजीवित करने की प्रक्रिया को

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

त्वरित करने में मदद पहुंचाता है जो कि सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, वह यह है कि यह 'गतिविधियों में मेल' तथा 'प्रगतिशील क्रियाओं में नित्यता' लाने में मदद पहुंचाता है। सक्रिय मनोरंजन का आशावादी रूप, खास महत्व की चीज होती है, जब प्राणी बूढ़ा हो जाता है तब इसका एहसास होता है।

प्रत्येक समूह के लिये, परिवार से लेकर कार्य क्षेत्र तक, जिसमें कि कार्य क्षेत्र की क्रियाओं की असफलता तथा उनका प्रेम अलग–अलग प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक तत्परता पर आधारित होती है।

प्रत्येक व्यक्ति को उन आवश्यकताओं से जो कि उनके बहुमुखी विकास की ओर उन्मुख होती है और जो उनके उच्च स्तरीय जैव क्रियाओं की साधन होती है; वहां पर शारीरिक संवर्धन की आवश्यकता प्राथमिक रूप से व्यक्ति की अपनी अवस्था से उत्पन्न होती है।

संदर्भः

Edward H.; Sociology of Sports, Home Wood, Illinoise Dorsey Press, 1973, p.89.

Robert S.M.; Child Training & Games Involvement, Ethnology, I April 1962, p.166-185.

Ball Donald W.; The Sealing of Gaming Skill Stralegy and Chance; Pacific Review, 15 July 1972, p.173.

Harper W.A.; The Philospie, Process in Physical Education, Academic Press, New York, 1974, p.239-40.

Harper W.A. (et.al); Ibid, 1974 p.239.

Freeman W.H.; Physical Education & Sports in a changing Society, Surjeet Pub. Delhi, 1982, p.136-137.

Cratty B.J.; Psychology in Contemporary Sports : Guidelines for coaches and Athletes, Prentice Hall, Englewood Cliffs, 1973, p.230-240.

Caillois R.; The Structure and Classification of Games, North American Review, Routledge & Kegan Paul, London, 2010, p.62.

Nelson J.H.; Sports in the Socio-cultural Process; W.C. Brown Company Jawa, 2015, p.436.

Appenzeller O.; Nutrition for Physical performance, Oxford Univ. Press, 2008, p.85-86.

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies